**संवाद लेखन**

**लोगों की बढ़ती स्वार्थवृत्ति के कारण वनों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है। वनों के इस सफ़ाए पर दो मित्रों की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।**
उत्तरः
उत्सव – अरे अनुराग! इतने दिन कहाँ थे? छुट्टियों में दिखाई ही नहीं दिए।
अनुराग – उत्सव, मैं दिखता कैसे?
उत्सव – क्यों अदृश्य होने का कोई फार्मूला हाथ लग गया है क्या?
अनुराग – अरे नहीं यार, इन छुट्टियों में मैं अपने दादा-दादी से मिलने गाँव चला गया था।
उत्सव – फिर तो बड़ा मज़ा आया होगा।
अनुराग – ठीक कह रहे हो उत्सव। वहाँ की हरियाली देखकर, आमों के बाग, कटहल, जामुन, फालसा आदि खाकर सचमुच मज़ा ही आ गया।
उत्सव – तब तो वहाँ से आने का मन ही नहीं कर रहा होगा?
अनुराग – शुद्ध ताज़ी हवा, ताज़ी हरी सब्जियाँ, शुद्ध ताज़ा दूध और शोर शराबा-रहित वातावरण छोड़कर आने को मन नहीं था पर छुट्टियाँ बीतने को थीं इसलिए आ गया।
उत्सव – अनुराग तू भाग्यशाली है। मुझे तो शहर के इसी प्रदूषित और दमघोंटू वातावरण में हर साल छुट्टियाँ बितानी
पड़ती हैं।
अनुराग – शहरों में प्रदूषण बढ़ाने में हम लोग भी ज़िम्मेदार हैं।
उत्सव – वह कैसे?
अनुराग – लोग अपने स्वार्थ के लिए वनों का सफाया करते हैं, बस्तियाँ बसाते हैं। धनी लोग इन वनों को काटकर फैकि ट्रयाँ स्थापित करते हैं। वे खुद तो लाभ कमाते हैं पर वायुमंडल को प्रदूषित और असंतुलित करते हैं।
उत्सव – मैं इस वर्षा ऋतु में अपने साथियों से खूब सारे पेड़ लगाने के लिए कहूँगा।
अनुराग – इसी में हम सभी की भलाई है।